# जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

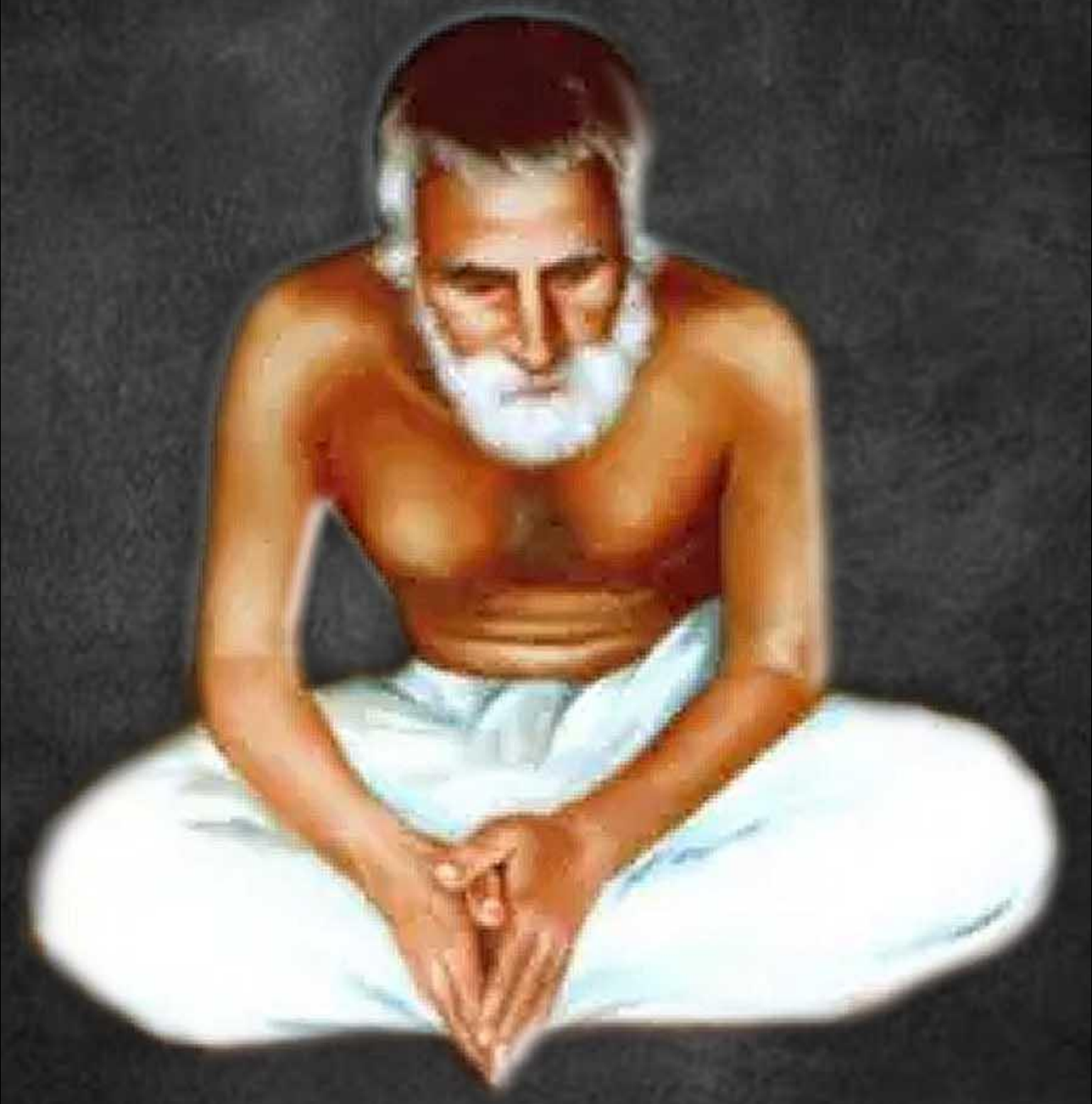

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

# प्रेम और काम

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

एक बार किसी एक पण्डित गोस्वामी की सन्तान ने कुलिया । नवद्वीप में "भ्रमर गीता" का पाठ करना शुरू कियापाठ और व्याख्या होने के बाद श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के पास समाचार पहुँचा — इस बार नवद्वीप में जो भ्रमर गीता की व्याख्या हो रही है, इस प्रकार की व्याख्या नवद्वीप में कभी किसी ने श्रवण नहीं की। जो

यह बात कह रहे थे, श्रील बाबाजी महाराज ने उसको कहा— तुम दोबारा इस भ्रमरगीता का पाठ सुनने मत जाना। देखो जब वर्षा होती है, तब मिट्टी में घासपात के जितने बीज होते हैं, वह सब बहुत जल्दी जल्दी अंकुरित हो जाते हैं। बहुत मेहनत से लगाए गए बीजों से अंकुर निकलते हैं और कोई कोई अंकुर समय से पहले विनष्ट हो जाते हैं। जिनका हृदय शुद्ध - सत्त्व है, जिनकी किसी प्रकार की कामना और अन्याभिलाष नहीं है, जो केवल गुरु वैष्णवों की सेवा में निरन्तर निष्ठायुक्त हैं, उस प्रकार के अनर्थ-मुक्त व्यक्तियों के हृदय में हरिनाम - कीर्तन करते करते, लीला

- श्रवण के द्वारा प्रेम के अंकुर का उद्गम होता है। लेकिन जिनके हृदय में काम वासना के बीज बिखरे हुए हैं, उनके हृदय में राधा-कृष्ण की विलास लीलाओं के श्रवण के फल से उसी क्षण - काम वासना की अग्नि प्रजवलित हो उठती है। राधा कृष्ण की लीलाओं के श्रवण का अभिनय कर उसका काम वासना रूपी घासपात और भी अधिक बढ़ने लगता है। बहिर्मुख जीवों का चित्त स्वाभाविक रूप से ही काम-वासना से आच्छादित (ढका हुआ) रहने के कारण वे श्रीश्री राधा - गोविन्द जी की लीलाओं को भी प्राकृत (जागतिक) नायक-नायिकाओं की

काम वृत्ति के समान समझते हैं। जो सोचते हैं कि उनकी राधा-कृष्ण की लीलाओं में श्रद्धा है, वे राधा-कृष्ण की लीलाओं को प्राकृत (सांसारिक) नहीं समझते, अप्राकृत ही मानते हैं, वे भी अपनी काम-आसक्ति को माया के प्रभाव से पहचान नहीं सकते। केवल मुँह से अप्राकृत कहने से और अपने को श्रद्धावान समझने से उसे अप्राकृत और श्रद्धावान नहीं कहा जा सकता। यह बात सुनकर पास बैठे हुए एक व्यक्ति ने कहा, "मैंने अपनी आंखों से देखा है जो इस भ्रमर गीता का पाठ श्रवण कर रहे थे, उनमें से कई व्यक्ति दिव्य - रस में उन्मत थे। कोई-कोई तो भाव में

चिल्लाकर रो रहा था, कोई 'हा राधे', 'हा कृष्ण' कहता हुआ कितना रो रहा था?" श्रील बाबाजी महाराज ने कहा यह सब दिव्य रस में उन्मत्तता नहीं है, यह सब काम रस में उन्मत्तता है, यह ही जगत - विनाश के कारण हैं। उनका रोना धोना देखकर ही तुमने प्रेम समझ लिया ! जिसका स्वयं प्रेम हुआ नहीं है, वह माया के दर्शन के द्वारा किस प्रकार प्रेम को पहचानेगा? जिन सब व्यक्तियों को प्रेम (?) प्राप्त हुआ है, उन्हें उनके अखाड़ों और घरों को छुड़ाकर इस गंगा के तट पर लेकर आओ और समस्त विषयों के सम्बन्धों को छोड़कर निष्कपट

भजन का आश्रय करने के लिए कहो। कुछ वर्ष इस प्रकार टिककर रह पाने के बाद देखा जाएगा, वे कितने भ्रमरगीता श्रवण करने के लिए व्याकुल हैं ! "

श्रीलगुरुदेव